पाठ-7
भेड़ाघाट

आइए, सीखें : ● प्राकृतिक सौन्दर्य से परिचय ● म.प्र. के दर्शनीय स्थल का ज्ञान ● पुनरुक्ति शब्द ● वाक्य निर्माण ● शुद्ध वर्तनी।

*(**पाठ-परिचय :** इस यात्रा वृतान्त में लेखक ने प्रकृति का बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है। लेखक ने नर्मदा के तट पर बसे भेड़ाघाट तथा आसपास के धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।)*

'प्रकृति यहाँ एकान्त बैठि, निज रूप सँवारति'

शायद 1914 की बात है, जब पहले - पहल भेड़ाघाट देखने का अवसर मिला। 1906 में जबलपुर में रहने तक ग्वारीघाट और तिलवाड़ाघाट तो देख लिए थे, किन्तु बहुत कीर्ति सुनकर भी भेड़ाघाट नहीं पहुँच सका था। कहते हैं, एक दिन संस्कृत के एक दिग्गज लेखक, जो सम्राट विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक बताए जाते हैं, नीबू के एक झाड़ के नीचे बैठे अपना संस्कृत कोश लिख रहे थे और सुना यह गया कि अपने शब्दकोश में लता और वृक्षों का वर्णन करते हुए वे नीबू का वर्णन करना ही भूल गए। यही स्थिति मेरी हुई थी।

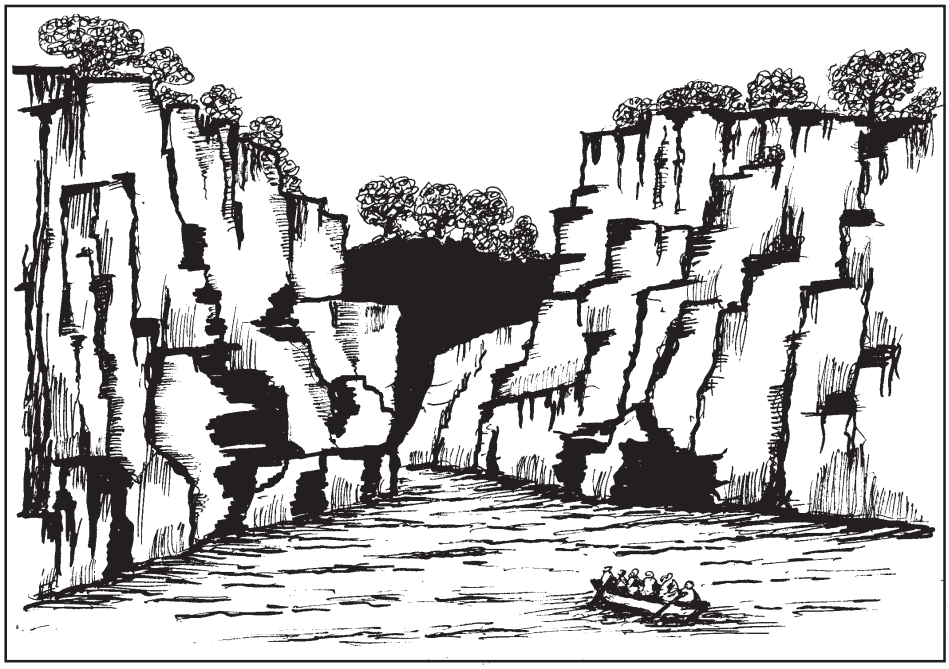

भेड़ाघाट जबलपुर से 13 मील ही तो है।

शिक्षण-संकेत - ■ पाठ का शुद्ध उच्चारण, उचित विराम-चिह्नों के साथ करें। ■ म.प्र. की प्रमुख नदियों तथा उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं व्यावसायिक महत्व की जानकारी बच्चों को दें। ■ पाठ में आए भावों एवं कठिन शब्दों को समझाएँ। ■ कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण बच्चों से करवाएँ।

लगभग आधे घण्टे में हम मीरगंज स्टेशन पर आ गए और उतर गए। उन दिनों यही गति बहुत तेज समझी जाती थी।

हम लोग आधे घण्टे में दस - ग्यारह मील पहुँच गए थे। दो - तीन अँग्रेज अपने खानसामे के साथ भेड़ाघाट ही जाने के लिए मीरगंज स्टेशन पर उतरे थे, किन्तु जिस तरह कच्ची सड़क से राह चलने वाले को कभी - कभी आकाश का शुक्रतारा भी अपना साथी मालूम होता है, वैस ही वे लोग मेरे साथी थे। शरीर से तो हम एक-दूसरे से कुछ ही गज की दूरी पर चले रहे थे, किन्तु धारणा में हम एक-दूसरे से सैकड़ों मील दूर थे।

उन दिनों मैंने यह तो सुन रखा था कि भेड़ाघाट में नर्मदा के दोनों किनारे संगमरमर के हैं, किन्तु मैं सौन्दर्य-बोध के कारण ही वहाँ जा रहा था, यह कहना अत्यंत कठिन है। जिस तरह वैद्य या डॉक्टर के नुस्खे कई वस्तुओं का मिश्रण ही है, उसी तरह मेरे मन में भेड़ाघाट के दर्शन की लालसा में कई भावनाओं का मिश्रण था। यों नर्मदा से मेरी ममता होना स्वाभाविक है, क्योंकि मैं पढ़ा तो उसके किनारे, बड़ा हुआ तो उसके किनारे और उसके संघर्षमयी होने का तो मैं इतना कायल हूँ कि अन्य वे नदियाँ मुझे पसंद नहीं आतीं, जिनके किनारे संन्यासी के सिर की तरह घुटे हुए होते हैं, जिनकी धार में 'घर-घर' शब्द होता, जिनकी रेती बहुत बारीक और मुलायम होती है। घुटे हुए किनारे की नदियों के पास जब-जब जाने को मिला, लगा यह भी एक सज़ा है, जिसे तो सिर्फ भोग ही लेना है। वायुमण्डल खुला है-पुण्यस्थल है, स्नानार्थी आते, जाते रहते हैं, श्लोक का पाठ होता है। बड़े-बड़े स्टेशन हैं, बहुत रेलें आती हैं, यह सब ठीक है, किन्तु किनारे जो रुके हुए हैं। कहते हैं, बैल को अपने खूँटे पर ही अच्छा लगता है, सो मुझे तो बीहड़, नर्मदा, उसके प्रपात और उसका घर्षण ही प्यारा लगता है।

मैं तो आपसे भेड़ाघाट की बात करना चाहता था न! हाँ, अब भेड़ाघाट की ही बात करें, यों तो नर्मदा अमरकंटक से निकली और मैं ग्वारीघाट तथा तिलवाड़ा देख चुका था। ये दोनों जबलपुर से बहुत निकट पड़ते हैं, किन्तु भेड़ाघाट नहीं देखा था। कहते हैं, 800 मील बहने वाली नर्मदा अमरकण्टक से एक सौ चौवन मील ही चल पायी थी कि भेड़ाघाट आ गया। मुर्की से नर्मदा चली और लोकेश्वर की ओर बही। यहीं, बीचों-बीच भेड़ाघाट है। कहते हैं, यहाँ किसी युग में भृगु ऋषि तपस्या करते थे। चट्टानों के निर्मल और सुन्दर स्वरूप को देखकर ऐसा लगता है मानों आज भी वे तपस्या कर रहे हैं। नदी के पानी में खड़ी विशाल चट्टानें छोटे तृणों को लिए सर्दी, गर्मी और बरसात को सह रही हैं। काटने से कट भले ही जाए किन्तु झुकना नहीं जानतीं। अपना क्रम नहीं रुकने देतीं, अपनी उज्ज्वलता मन्द नहीं होने देतीं। चाँद आता है तो चाँदी जैसी चमक उठती हैं। सूरज आता है तो उस जैसी तप उठती हैं। हाँ, जब बरसात आती है अथवा जब घना अन्धकार आता है, तब भी वे अपनी उज्ज्वलता, अपनी पवित्रता खोने को तैयार नहीं हैं। इन सबको तपस्या न कहा जाए, तो क्या कहा जाए?

नर्मदा मानो यहाँ चाँदी के कारागार की बन्दिनी है। यहाँ से मील भर ऊपर बहती हुई नर्मदा, धुँआधार प्रपात बनाती हुई नीचे गिरी थी, तब उसने, उसकी मछलियों और मगरमच्छों ने यह सोचा ही न होगा कि इसके उस मधुर और सुन्दर पतन के पश्चात् ही संगमरमर की दो विशाल भुजाएँ उसे गोद में लेकर खड़ी हो जाएँगी और जो दुलार उसने अपने जन्मदाता अमरकण्टक से न पाया होगा और जो सुन्दरता से भरा प्यार भूमि पर नीचे - नीचे सरकते उसे प्राप्त न हुआ होगा, वह स्नेह, वह दुलार उसे सतपुड़ा की संगमरमर की चट्टानें देने वाली हैं। उस समय ऊपर नीला आसमान मानों कुछ नहीं मालूम होता, सतपुड़ा के निर्मित संगमरमर के इन गौरव शिखरों पर खड़े होकर, लगता है कि विधाता को चुनौती भेज दें कि करो कोशिश और एक सा बनाकर दिखाओ भला! इस समय नदी नर्मदा का नीचे की ओर फिसलते जाना, दृढ़ के सामने तरलत्व की यह लाचारी निष्काम होकर भी कितनी शोभाधाम हो गई है। लगता है, जो जनसेवा के लिए नीचे गिरना स्वीकृत करते हैं, उन्हें शोभाधाम के ऐसे ही हाथ सँभाल लिया करते हैं। संगमरमर के ऊपर हरी घास और घासपात को जब लहराते देखा तो जी ने कहा, यह कुल-कलंक यहाँ भी आ गया, तभी चट्टान मानों बोल उठी, बड़ा छोटों को सिर पर लेकर ही बड़ा होता है। वे मेरी विशालता की शोभा हैं। नगण्य तुम हो, जो उनका मूल्य नहीं कूत पाते। तुम थोड़ी देर के लिए भेड़ाघाट देखने आए हो, इन्होंने जन्म लेते ही भेड़ाघाट देखा है और भेड़ाघाट देखते - देखते ही मिट जाएँगे।

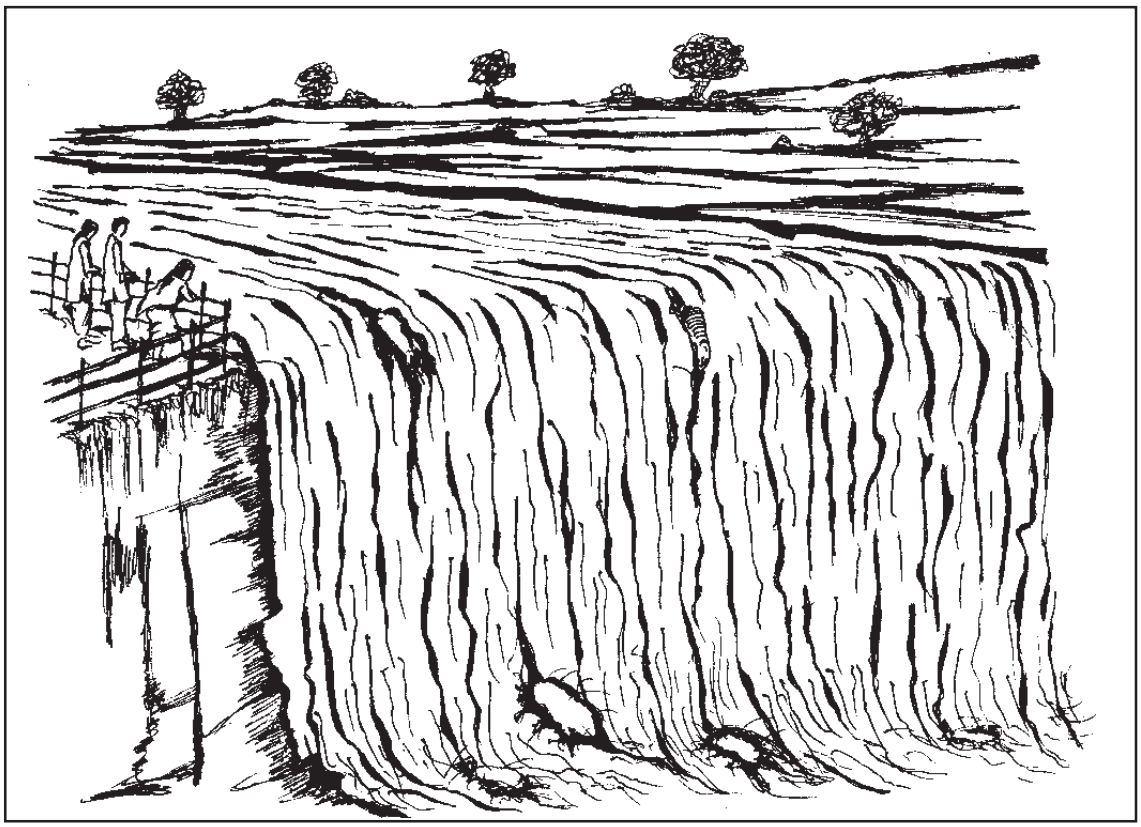

नर्मदा के उस पावन स्थान के विषय में जब मैंने वहाँ खेलते हुए ग्रामीण बच्चों से पूछा कि इसे क्या कहते हैं, तो कानों में बाले पहने हुए, टोपी लगाए हुए एक फूले गालों के बच्चे ने बताया, ''जा तो दूध- धाला आय'' दूध - धारा, अहा! कितना अच्छा नाम है। जब जोर का घर्षण होता है, तब पानी भी दूध जैसा दिखायी पड़ता है, इसलिए जब जोर का घर्षण हो तो जीवन भी दूध जैसा उजला क्यों न हो जाए।

तब न, दूध धारा के पास जो लोग स्नान करने आते हैं लगता है, श्रीधर पाठक की ये पंक्तियाँ, जो उन्होंने कश्मीर की शोभा के लिए कही है, यहाँ आकर भी ठीक बैठती हैं -

प्रकृति यहाँ एकान्त बैठि, निज रूप सँवारति,

पल - पल पलटति भेष, छलकि छन-छन छवि धारति

मानो जादूभरी, विश्व बाजीगर थैली,

खेलत में खुल परी, शैल के सिर पर फैली।

हिमालय की बर्फीली चोटियों पर नज़र डालिए, वे छल रही हैं, गल रही हैं, एक सफेदी यहाँ भी है, जो गलती नहीं है, ढलती नहीं है। नर्मदा चाहे कितनी मर-मर करे किन्तु वह मरती नहीं है। शताब्दियों ने इसे अमर ही देखा है, इसे अमर ही देखेगी।

बेचारा भूगोल उस दिन मुझसे कहने आया, ''यह मण्डला जिले में नहीं है। आप निकट से जबलपुर जिले से भले ही आए हों, किन्तु यह जबलपुर जिले में भी नहीं है। संगमरमर की गोद में यह धारा सिवनी जिले में बह रही है। किनारे पर मन्दिर भी हैं, धर्मशाला भी है, किन्तु मन तो उस कृष्णत्व के साथ खेल रहा था, जो सतपुड़ा की संगमरमरी गोद में अपनी श्यामता का गौरव बिखेर रहा था। भेड़ाघाट देखने के बाद ऐसा लगा कि यह तो गनीमत है कि मीरगंज से भेडाघाट तक पक्की सड़क है, किन्तु यदि कच्ची भी होती तो भी बहुत आनन्द से आते।

जब नर्मदा नीचे को बहती है, तो मन ऊपर को किसे ढूँढने जा रहा है? वह नर्मदा के सौन्दर्य के साथ बहकर भी भीग क्यों नहीं उठा? भेड़ाघाट की छोटी-सी पहाड़ी पर एक तो गौरीशंकर जी का मंन्दिर है, एक चौंसठ योगिनी का मन्दिर है। दूध -धारा के जल-प्रपात का 'घर-घर' शब्द गौरीशंकर के मन्दिर में बैठकर दिन में आप नहीं सुन सकते। इस बदनसीब प्रकाश ने मानव को दिया बहुत कम, उससे लिया बहुत अधिक है। रात हुई, माना कि पक्षी घोंसलों मे सो गए, किन्तु उनसे भी ऊपर नए चमकने लगे ना! रात है, मानो सन्नाटा पहरे पर है, इस समय वायु दूध धारा का 'घर-घर' शब्द लेती है और गौरीशंकर के मन्दिर में पड़े हुए यात्री के कानों में ईमानदारी से पहुँचाती जाती है। इस जंगल में मन्दिर कैसे बन गया? नथ

बना देने वाले को देवियाँ याद रखती हैं, नाक बनाने वाले को भूल जाती हैं। मानो नाक पाना उनका अधिकार था और नथ देना किसी दूसरे का अधिकार है। सो यह पूछने की तबीयत नहीं चाहती कि संगमरमर की चट्टानों की गोद में नर्मदा की धारा कब आई? किन्तु इतिहास की कुरेदन से यह क्यों न पूछा जाए, कहो भाई, यह मन्दिर किसने बनवाया है? सुनते हैं, त्रिपुरी राजघराने के महाराज करणदेव की महारानी अल्हणा देवी ने संवत् 1155-56 विक्रमादित्य ने उसे बनवाया और गत साढ़े आठ सौ वर्षों से दूधधारा का स्वर इस मन्दिर में बराबर सुनाई दे रहा है। मूर्ति पर हमारे प्रमाणों के चिह्न हों, न हों नर्मदा के स्वरों की तह इस मूर्ति पर अवश्य जमी हुई होगी।

- पं. माखनलाल चतुर्वेदी

लेखक परिचय - पं. माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म 4 अप्रैल, 1889 ई. को 'बावई' मध्यप्रदेश में हुआ था। इनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर मुखर हुआ है। 'हिम किरीटनी', 'हिम तिरंगिनी', धरण ज्वार आदि आपकी प्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ है। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक आपकी रचना बहुत लोकप्रिय है। वह कवि ही नही पत्रकार भी थे उनके द्वारा संपादित कर्मवीर का भारत में स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

बंदिनी	----------	नगण्य	----------
निष्काम	----------	नुस्खा	----------
कृष्णत्व	----------	कूता	----------
घर्षण	----------	तृण	----------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(क) भेड़ाघाट जबलपुर से कितने मील दूर है?

(ख) गौरीशंकर मंदिर किसने बनवाया था?

(ग) दूध-धारा किसे कहते हैं?

(घ) भेड़ाघाट घूमने कौन गया था?

(ङ) भेड़ाघाट पर नर्मदा के दोनों ओर की चट्टानें किस पत्थर की बनी हैं?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(क) नर्मदा नदी के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ख) जबलपुर में भेड़ाघाट के अतिरिक्त कौन-कौन-से घाट हैं? वे भेड़ाघाट की तरह आकर्षक क्यों नहीं लगते?

(ग) लेखक द्वारा की गई भेड़ाघाट यात्रा का वर्णन कम-से-कम 100 शब्दों में कीजिए।

प्रश्न 4 सही विकल्प चुनकर लिखिए -

1. सतपुड़ा का जंगल कहाँ स्थित है ?

   (क) उत्तर प्रदेश (ख) आंध्र प्रदेश (ग) मध्य प्रदेश (घ) बिहार

2. धुआँधार प्रपात किस नदी के जल के गिरने से बनता है?

   (क) नर्मदा (ख) गंगा (ग) यमुना (घ) ताप्ती

3. भेड़ाघाट की पहाड़ी पर कौन - सा मंदिर बना है?

   (क) गणेश (ख) महादेव (ग) गौरी - शंकर (घ) सीता - राम

4. 'पल-पल पलटति भेष, छलकि छन - छन छबि धारति' यह पक्ति किस कवि की है?

   (क) माखनलाल चतुर्वेदी (ख) श्रीधर पाठक

   (ग) शिवमंगल सिंह 'सुमन' (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्रश्न 4 निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

1. ''बैल को अपने खूँटे पर ही अच्छा लगता है।''
2. नर्मदा चाहे कितनी मर-मर करे, वह मरती नहीं है।
3. जो जनसेवा के लिए नीचे गिरना स्वीकृत करते है, उन्हें शोभाधाम के ऐसे ही हाथ सँभाल लिया करते हैं।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए -

डॉक्टर, ड्रॉप, कॉलेज, बॉल, बॉस, कॉल, लॉकर, ऑफिस।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लिखिए -

संन्यासी, नवरत्न, भेडाघाट, खूँटा, बरसात, उज्ज्वलता, नर्मदा, मुलायम, रेती, किनारा, दर्शन, ग्वारीघाट।

प्रश्न 3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुरूप दिए गए शब्दों का प्रयोग एक-एक वाक्य में कीजिए-

उदाहरण - कालिदास, विक्रमादित्य, नवरत्न

वाक्य : कालिदास विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक थे।

1. नगण्य, मूल्य, ईमानदारी
2. नर्मदा, जबलपुर, भेड़ाघाट, प्रकृति, चित्रण, मनोरम
4. रात, पक्षी, घोंसला

प्रश्न 4. शुद्ध शब्द छाँटकर सामने के खाने में लिखिए -

परवत	पर्वत	पर्बत	
नर्मदा	नरमदा	नरबदा,	
श्रेणी	शैणी,	शरैणी,	
पूरवी	पूर्वी	पूर्वि	
प्रपात	परपात	पर्पात	
पशचिम	पश्चिम	पशचिम	

ध्यान दीजिए-

कल

अर्थ	**वाक्य प्रयोग**
अगला दिन -	मैं कल इन्दौर जाऊँगा।
पिछला दिन -	प्रांजल कल भोपाल गया था।
चैन -	तुम्हें कल नहीं, दिन भर भागते फिरते हो।
मशीन -	यह कल-पुर्जे की दुकान है।

यहाँ एक ही शब्द – 'कल' के विभिन्न वाक्य प्रयोग हुए हैं, जिनसे अलग-अलग अर्थ स्पष्ट हो रहा है।

जानिए –

प्रसंग या प्रयोग के अनुसार एक शब्द के कई अर्थ निकलते हैं; अत: ऐसे कई अर्थ प्रगट करने वाले शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों के कम-से-कम दो-दो अर्थ लिखकर, उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

आम, काल, गति, अर्थ, तात

ध्यान से पढ़िए –

जो कभी न मरे उसे अमर कहते हैं।

जिसका कभी अन्त न हो वह अनन्त कहलाता है।

जो ईश्वर में विश्वास करता है उसे आस्तिक कहते हैं।

जिसे जीता न जा सके उसे अजेय कहते हैं।

अब समझिए –

भाषा में प्रभाव लाने और अपनी बात कम शब्दों में कहने के लिए वाक्यांशों अथवा अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द कहकर अधिक-से-अधिक भाव अभिव्यक्त किए जाते हैं। यह एक शब्द सम्पूर्ण वाक्यांश को अपने में समेटे रहता है। ऐसे शब्द 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' अथवा 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' की श्रेणी में आते हैं।

6. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए, नीचे बने घड़े में लिखे शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर लिखिए –

अ. उपकार मानने वाला

आ. जो अनुकरण करने योग्य हो

इ. कम खाने वाला

ई. रोगी का इलाज करने वाला

उ. जो सब कुछ जानता हो

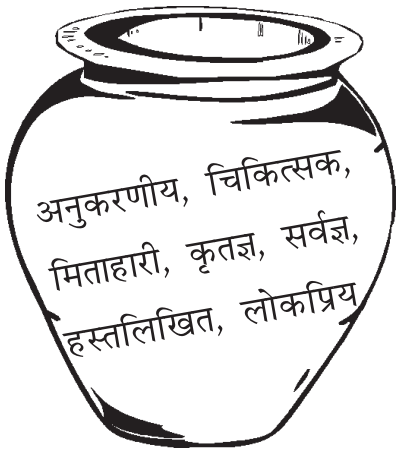

ऊ. हाथ से लिखा हुआ

ए. जो लोगों को प्रिय हो

योग्यता विस्तार

1. अपने आस-पास के पहाड़, नदी, घाट आदि की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. अपने प्रदेश के अन्य जल प्रपातों की जानकारी एकत्रित करके सूची बनाइए।
3. यदि आपने कोई दर्शनीय स्थल देखा हो, तो उसकी विशेषताएँ बतलाते हुए यात्रा-वृत्तान्त लिखिए।